भाषा आ **बोली मे अन्तर**

भाषा विचाराभिव्यक्तिक ओ साधन थिक जाहि मे ध्वनि क व्यवहार कएल जाइत अछि । विद्वान लोकनिक अनुसार ' भाषा व्यक्त ध्वनि संकेतक द्वारा मानव विचार क अभिव्यक्ति थिक ।' मानवक मुँह सँ निकलल प्रत्येक ध्वनि भाषा नहि कहल जाइत अछि । मात्र सार्थक एवं शब्द - निर्माण मे समर्थ ध्वनि सभ भाषाक परिधि मे अबैत अछि ।

बोली भाषाक ओ रूप अछि जकर व्यवहार घरमे अर्थात बहुत सीमित क्षेत्रमे होइत अछि । ई बोली कनेको साहित्यिक नहि होइत अछि आ ओ बाजय बलाक मुँहमे रहि जाइत अछि । डॉ० पी० गुनेक कहब छनि जे " Dialect is constituted by the speech of all these persons , In whose utterances , variations are not sensitive perceived or attended to . " अर्थात बोली ओहि सब लोकक बोल चालक भाषाक ओ मिश्रित रूप अछि जकर भाषा मे पारस्परिक भेद कें अनुभव नहि कएल जाइत अछि ।

भाषा निर्धारण मे शिक्षा , व्यवसाय , भौगोलिक स्थिति, आयु , सामाजिक स्थिति आ वातावरणक भेद सहायक होइत अछि । एहि आधार पर व्यावहारिक रूपसँ कहल जा सकैत अछि जे एक व्यक्तिक भाषा दोसर व्यक्तिक भाषा सँ भिन्न होइत अछि । एहि रूपमे प्रत्येक व्यक्ति क भाषा बोली होइत अछि आ एक व्यक्तिक बोली सदिखन एक सदृश नहि होइत अछि अर्थात वातावरण आ प्रयोग कएल जाएबला स्थान परिवर्तनक संगहि व्यक्तिक बोली मे सेहो परिवर्तन आबि जाइत अछि । उदाहरणक लेल एक व्यक्तिक बोली अपन परिवार मे किछु आ दोस्तमे किछु एवं व्यवसाय , कार्यालय आदि मे किछु आरो प्रकारक होइछ । सोझ शब्दमे कहल जा सकैत अछि जे परिस्थिति भेद सँ व्यक्तिक बोली मे अन्तर आबि जाइत अछि । मुदा एहि मे पर्याप्त साम्य सेहो भेटैत अछि । एहि प्रकारक साम्य अनेक (निकटतम) व्यक्तिक बोली मे होइत अछि आ साम्यक आधार पर सेहो उपबोली सामूहिक रूपक नाम अछि । एहि प्रकार सँ अनेक उपबोली मे जखन साम्य होइत अछि त ओ बोली कहबैत अछि । कतेको बोली पर्याप्त सामीप्य (साम्य) रहलाक कारण ओ भाषा कहबैत अछि।

एक भाषाक अंतर्गत कतेको बोली अबैत अछि । बाजयबलाक संख्याक दृष्टिएँ ' बोली ' क संख्या कम आ ' भाषा ' बाजयबलाक संख्या वेशी होइत अछि । एहि आधार पर हम कहि सकैत छी , जे बोलीक क्षेत्र अपेक्षाकृत छोट आ भाषाक क्षेत्र पैघ होइत अछि । कहल जा सकैत अछि जे भाषाक क्षेत्र मे अनेक बोली होइत अछि । एकर विपरीत एक बोलीक अंतर्गत अनेक भाषा नहि भए सकैत अछि । उदाहरणक लेल हिंदीक अंतर्गत अवधी , ब्रज ,खड़ीबोली आदि अबैत अछि मुदा ब्रजक अंतर्गत हिंदी , पंजाबी , मराठी , मैथिली आदि नहि आबि सकैत अछि ।

दोसर भेद जे हमरा बोली आ भाषा मे प्रतीत होइत अछि ओ बोधगम्यता मे अबैत अछि । एक भाषाक अंतर्गत बोली सभ कें बुझव आसान अछि - उदाहरणार्थ अवधी बाजयबला खड़ीबोलिक ' मैं जाता हूँ ' कें आसानी सँ बुझि लेत । मुदा ई आवश्यक नहि जे एक भाषा कें जानएबला दोसर भाषा कें बुझिये लेत । उदाहरणक लेल मैथिली जानयबलाक लेल आवश्यक नहि जे अंग्रेजीक ' I go ' क अर्थ बुझि लेत । एहि प्रकार सँ खड़ीबोली आ अवधी , हिंदीक दू बोली कहाओत आ हिंदी आ अंग्रेजी दू भाषा होएत ।

तेसर भेद ई अछि जे बोली दैनिक व्यवहारक वस्तु अछि जखन कि भाषा साहित्य , शासन आ शिक्षा आदिक लेल प्रयोग होइत अछि । सूक्ष्म दृष्टि सँ देखल जाय त ई ग्राह्य सेहो नहि होइछ , यथा सूरदास क ब्रज मे रचल पद आ तुलसीदास क अवधी मे रचल गेल रामचरित मानस कोनो अत्यंत उत्कृष्ट एवं परिनिष्ठित भाषाक कृति सभकें पाछू छोड़ि दैत अछि ।

वास्तव मे बोली आ भाषा मे विभाजक रेखा खींचल जाइत अछि मुदा बोली आ भाषा मे कोनो तात्विक अंतर नहि होइत अछि । बोली अनुकूल परिस्थिति पावि कए भाषा बनि जाइत अछि । एहि तथ्यक पुष्टि पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिक सेहो कएलनि अछि । यथा -

L. H. Gray क कहब छनि - " It is impossible to draw the exact lines of demarcation between eighter dialects or languages , though at their frontiers they merge imperceptibly one into another . "

पुनश्च Edward Sapir क कथन छनि जे - " To the tinguist there is no real difference between a ' Dialect ' and a ' Language ' which can be shown to be related is restricted to a another

languages . By preference the term is restricted to a form of speech which does not differ sufficiently from another from of speech to be unintelligible to the speakers of the latter . "

अस्तु , उपर्युक्त विवरण सँ ज्ञात होइत अछि जे कोनो भाषाक अध्ययन मे बोलीक बड़ महत्व होइत अछि । वस्तुतः ओही सँ भाषाक जीवित रूप हमरा देखबाक हेतु भेटैत अछि । ओ लिखित व्याकरणिक नियम सभसँ युक्त होइत अछि ।

बोली कें भाषा बनबा मे सभसँ पैघ हाथ सम्पर्कक होइत अछि । व्यक्तिक आपसी संपर्क जतेक बेशी होएत ओतबय जल्दी भाषाक रूप धारण कए लेत । सम्पर्क रहला सँ भाषाक भेदे टा नहि मेटाइत अछि बल्कि ओकर रुक्षता सेहो मेटा जाइत अछि । सम्पर्क कम भेला सँ अथवा सम्पर्क नहि रहलाक स्थिति मे बोली सभ बोलीये बनल रहि जाइत अछि , ओकर विकास वा भाषा बनब असम्भवे रहैत अछि । अतएव सम्पर्कक सहायक कारणें बोली सँ भाषा बनबाक महत्व प्राप्त होइत अछि । बोली सँ भाषा बनबाक निम्नलिखित कारण होइत अछि - 1. प्राकृतिक 2. सामाजिक 3. धार्मिक 4. साहित्यिक 5.शैक्षिक 6. आर्थिक 7. राजनीतिक 8 . सैनिक 9 . विज्ञान ।

एहि रूपसँ हम देखैत छी जे अनेक कारण सँ बोली भाषा मे परिणत होइत देखल जाइत अछि । एहि सँ बोलीकें महत्ता भेटैत अछि । कतहु एक कारण महत्वपूर्ण होइत अछि त कतहु दोसर कारण । कतहु एकसँ वेशी कारण एहि कार्य कें सिद्ध करैत अछि । बोली आ भाषा मे अल्प अंतर होइतो अनेक कारण बोली सभकें भाषाक संज्ञा दियाबय मे काज करिते टा अछि ।